हिंदी प्रकोष्ठ की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

# ज्ञानधारा

शिशिर अंक | 2024

विज्ञानं ब्रह्म

## श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा, जम्मू एवं कश्मीर (भारत)

--संरक्षक--
प्रो. प्रगति कुमार
(माननीय कुलपति)
--सम्पादक--
डॉ. अनुराग कुमार
(नोडल अधिकारी)
--सह-संपादक--
मिलिन्द शुक्ल
(छात्र सचिव)

# क्रम


| शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| • श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य महाभाग | 6 |
| • यक्ष-युधिष्ठिर संवाद | 8 |
| • वीर बाजी राउत | 17 |
| • धूर्त गीदड़ एवं कर्पूरतिलक हाथी | 19 |
| • अंतरंग शिष्य | 21 |
| • प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक | 25 |

आवरण: एकात्म प्रतिमा, ओम्कारेश्वर (मध्य प्रदेश) एवं शंकराचार्य समाधि स्थल, केदारनाथ (उत्तराखंड) में स्थित आदि शंकराचार्य की प्रतिमा का चित्र।

**अत्यन्तार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् ।**

श्रेष्ठ लोगों की सम्पत्ति का फल आपदा ग्रस्त जनों की पीड़ा को सर्वथा शान्त करना होता है।

(मेघदूत 1.53)

विज्ञानं ब्रह्म

**Prof. Pragati Kumar**
**Vice-Chancellor**
प्रो० प्रगति कुमार
कुलपति

# Shri Mata Vaishno Devi University

Kakryal, Katra–182320 (J&K) INDIA
(A Statutory Technical University established by J&K Legislature; recognized u/s 2(f) & 12(B) of UGC)

Mob./मो० : 9419281008
Tel: (O)/दूरभाष : 01991-285686,Fax/फैक्स:01991-285573
E-mail/ईमेल :vc@smvdu.ac.in ; vc.pk@smvdu.ac.in
: Website/वेबसाइट: www.smvdu.ac.in

## कुलपति संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है की हिन्दी प्रकोष्ठ "ज्ञानधारा पत्रिका 2024" के शिशिर अंक का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का यह अंक जगद्गुरु आदि शंकराचार्य महाभाग को समर्पित है, जो साक्षात् भगवान शंकर के अवतार हैं "**शंकरो शंकरः साक्षात्**"। उन्होनें अल्पायु में ही ब्रह्मसूत्र, गीता, उपनिषद् पर भाष्य लिखे। उनके व्यक्तित्व में प्रकाण्ड पाण्डित्य, गंभीर विचार शैली, अगाध भगवद्भक्ति आदि का दुर्लभ समावेश दिखायी देता है। अपनी बत्तीस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने अनेक बृहद् ग्रन्थों, स्तोत्रों आदि की रचना की, पूरा भारत भ्रमण कर विभिन्न मतावलंबियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया, भारत के चारों कोनों (दिशाओं) में मठ स्थापित किए, उत्तर में ज्योतिर्मठ, पश्चिम में द्वारका मठ, पूर्व में गोवर्धन मठ एवं दक्षिण में श्रृंगेरी मठ की स्थापना करके सनातन धर्म की रक्षा कर नव चेतना का संचार किया। अपनी दिग्विजय से आचार्य शंकर ने अद्वैत दर्शन का प्रकाश समस्त राष्ट्र व विश्व में फैलाया एवं पंच देव आराधना का प्रतिपादन कर विभिन्न पंथों को एक किया। आचार्य शंकर का जीवन समस्त भारत एवं प्रत्येक युवा के लिए प्रेरणा रूपी पुंज है।

**श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।**
**नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम्॥**

**मैं शंकर भगवत्पाद को प्रणाम करता हूं, जो वेदों, शास्त्रों और पुराणों के भंडार हैं, जो करुणा के धाम हैं और जो विश्व को कल्याण प्रदान करते हैं।**

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है की यह अंक जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जी के चरणों में समर्पित है एवं इस अंक को तैयार करने वाले हिन्दी प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी डॉ. अनुराग कुमार, छात्र सचिव मिलिन्द शुक्ल व पत्रिका मंडल को मैं साधुवाद देता हूँ। डॉ. अनुराग कुमार के कुशल मार्गदर्शन में छात्र सचिव मिलिन्द शुक्ल ने इस पत्रिका को प्रभावी व ज्ञान से ओत-प्रोत बनाया है, जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय परिवार व पत्रिका के पाठकों को नव चेतना प्राप्त होती है। यह पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसित रहे ऐसी मेरी माँ वैष्णवी से प्रार्थना है।

शुभकामनाओं सहित!

प्रगति कुमार

**(प्रगति कुमार)**
**कुलपति**

**डॉ० अनुराग कुमार**

**(विभाग प्रमुख/आचार्य, भाषा एवं साहित्य विभाग)**

नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ

## || संदेश ||

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है की हम ज्ञानधारा शिशिर अंक 2024 का प्रकाशन कर रहे हैं। यह अंक जगद्गुरु आदि शंकराचार्य महाभाग के चरणों में समर्पित कर रहें हैं। उनकी विराटता एवं पांडित्य सूर्य के समान ही उच्च व तेजस्वी था। आदि शंकराचार्य भगवान शिव के साक्षात् स्वरुप हैं, जिन्होने समस्त भारत राष्ट्र को एकात्म की डोर से बांधते हुए, सनातन संस्कृति के ध्वज को यशस्वी किया। ऐसे ज्ञानपुंज, शिवस्वरुप आचार्य शंकर के चरणों में अनंत प्रणाम।

इस पत्रिका के संपादन के लिए छात्र सचिव मिलिन्द शुक्ल को हार्दिक शुभकामनाएं। उन्होंने अपने मूल्यवान समय का हिस्सा इस पत्रिका में लगाकर इसे पाठकों हेतु कल्याणकारी बनाया।

पत्रिका को पढ़कर आनंद व उत्साह की अनुभूति करें।

धन्यवाद

अनुराग

**- डॉ० अनुराग कुमार**

(नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ)

**hindi.cell@smvdu.ac.in** **hindicell.smvdu.ac.in**

**हिन्दी प्रकोष्ठ, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटड़ा, जम्मू एवं कश्मीर (भारत)-१८२३२०**

## श्रीगीता ज्ञान

**यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।**
**स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥**

**( तृतीय अध्याय, श्लोक २१)**

**श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्यसमुदाय उसीके अनुसार बरतने लग जाता है।**

॥ॐ श्री वैष्णवी नमः॥

“

वेदांत दर्शन के सबसे महान शिक्षक शंकराचार्य थे। ठोस तर्क द्वारा उन्होंने वेदों से वेदांत की सच्चाइयों को निकाला और उन पर ज्ञान की अद्भुत प्रणाली का निर्माण किया जो उनकी टिप्पणियों में सिखाई गई है। उन्होंने ब्रह्म के सभी विरोधाभासी विवरणों को एकीकृत किया और दिखाया कि केवल एक ही अनंत वास्तविकता है।

**- स्वामी विवेकानंद**

# श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य महाभाग

आदि शंकराचार्य भारतीय संस्कृति के कालजयी और यशस्वी उन्नायक हैं। महान ज्ञानी और संत अथवा जगतगुरु के रूप में उनकी छवि आज भी प्रणम्य है। भारतीय साहित्य और संस्कृति की भूमिका में हम वह सक्रियता पाते हैं, जो दक्षिण में भक्ति के रूप में पैदा हुई। आचार्यों ने जिसे विभिन्न संहिताओं और शास्त्रों का रूप दिया, उसे ही आचार्य शंकर का बहुज्ञानी व्यक्तित्व अद्वैत वेदांत की व्याख्या को लेकर उपस्थित होता है और जिसे विद्वान भारतीय चिंतन का पुनर्जागरण मानते हैं। इसी चिन्तन और पुनर्जागरण से ऐसी प्रतिक्रियाएँ भी सामने आयीं जिसे भक्ति आन्दोलन कहा जाता है। अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रयोजनों को लेकर शंकराचार्य समग्र भारत की यात्रा करते हैं। पीठों की स्थापना करते हैं और ग्रंथों की रचना इस तरह करते हैं जिससे पाठक को ईश्वर अथवा ब्रह्म के सान्निध्य का मार्ग समझ में आ जाये। वे अपने समय और समाज में प्रचलित धर्म और दर्शन से सीधा साक्षात्कार करते हैं। उनके जीवन-वर्षों की संख्या भले ही कम हो पर रचित ग्रंथों की संख्या कई-कई जीवन के समकक्ष है। वे संवाद करते हैं, शास्त्रार्थ करते हैं और भारतीय वेदों, गीता और उपनिषदों पर भाष्य लिखकर यह प्रमाणित करते हैं कि भारतीय जीवन शैली श्रेष्ठ है। अतुल्य है। उनके द्वारा की गयी एकात्म की संकल्पना हमारे वर्तमान के लिए भी धरोहर है।

आदि शंकराचार्य का जन्म केरल प्रदेश भारत में अलवाई (पूर्णा) नदी के निकट बसे कालड़ी ग्राम के नम्बूद्रि ब्राह्मण परिवार में शिवगुरु और आर्याम्बिका दम्पति के यहाँ हुआ। 508 ई.पू. को शिवगुरु व आर्याम्बिका की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उनके घर में अवतार लिया। वे अल्पायु थे। वे अपनी विलक्षण स्मरण शक्ति तथा विभिन्न विषयों में निष्णात होने के कारण प्रख्यात थे। प्रारंभ से ही उन्हें संन्यास प्रिय था। इसकी अनुमति के लिए मगरमच्छ की जनश्रुति प्राप्त होती है। वे माता की आज्ञा से संन्यास धारण कर इस प्रतिज्ञा के साथ भारत भ्रमण के लिए निकले कि वे अपनी माता के अंतिम दिनों में उपस्थित रहेंगे। बाल संन्यासी का यह दृढ़ संकल्प ही उन्हें संन्यासी से शंकराचार्य बनाता है। इतिहासकारों ने उनके यात्रा पथ को लगभग श्रीराम के पथ की तरह विवेचित किया है। शंकराचार्य के विविध ग्रंथों में महानदी, अमरकंटक, नर्मदा, ओंकारेश्वर जैसे नाम आते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश ही उनकी साधना स्थली रही है। उनका समाधि स्थल केदारनाथ धाम में है।

आदि शंकराचार्य की विलक्षण प्रतिभा और महानता का परिचय इनके बचपन से ही मिलने लगा। तीन वर्ष की अवस्था में पहुँचते-पहुँचते ही इनके पिता परलोकवासी हो गये। पाँच वर्ष की अवस्था में इन्हें पढ़ने के लिये गुरुकुल भेजा गया। सात वर्ष की आयु में ये सम्पूर्ण वेद-शास्त्रों में पारंगत होकर घर वापस आ गये। इनकी असाधारण प्रतिभा को देखकर लोग आश्चर्यचकित रह जाते थे। विद्याध्ययन समाप्त करनेके बाद आदि गुरु शंकराचार्य ने संन्यास लेना चाहा, किन्तु इनको माता ने अनुमति नहीं दी।

आदि शंकराचार्य ने गोविन्दभगवत्पाद से संन्यास की दीक्षा ली और अल्पकाल में ही योगसिद्ध महात्मा हो गये। गुरु ने इन्हें काशी जाकर ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखने की आज्ञा दी। काशी में भगवान शिव ने इन्हें चाण्डाल के रूप में दर्शन दिया। काशी में ही इन्हें भगवान व्यास के भी दर्शन हुए और उनकी कृपा से इनकी सोलह वर्ष की आयु बत्तीस वर्ष हो गयी। भगवान व्यास ने इनको अद्वैत सिद्धांत का प्रचार करने की आज्ञा दी।

तदनन्तर आदि शंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और शास्त्रार्थ में जैन, बौद्ध आदि विभिन्न मतवादियों को परास्त करके अद्वैतवाद को स्थापना की। यद्यपि इन्होंने अनेक मन्दिर बनवाये, किन्तु चारों धामों में इनके चार मठ विशेष प्रसिद्ध हैं। आज भी इनके द्वारा स्थापित मठों के प्रधान आचार्य शंकराचार्य के नाम से ही जाने जाते है। भगवान् शङ्कराचार्य के द्वारा बनाये ग्रंथों में ब्रह्मसूत्र भाष्य, उपनिषद्-भाष्य, गीता भाष्य, पञ्चदशी आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार बत्तीस वर्ष के अल्पकाल में अपने अभूतपूर्व ज्ञान से संसार को वेदान्त का अभिनव प्रकाश प्रदान करके भगवान शंकराचार्य ने सम्पूर्ण मानव जाति का अनुपम कल्याण किया।

आदि शंकराचार्य की रचनात्मक प्रसिद्धि उनके भाष्य ग्रंथों से हुई। भाष्य-लेखन समय की अनिवार्यता थी। वेदांत के प्रवाह को गति देने के लिए उन्होंने भाष्यों की रचना की। वे एक साथ विविध विषयों और विविध दिशाओं में लेखन कार्य कर सकते थे। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार उनके जीवन में विरोधी भावों का एकत्र संग्रह मिलता है। वे दार्शनिक भी हैं और कवि भी, ज्ञानी पण्डित भी हैं और संत भी, वैरागी भी हैं और धर्म सुधारक भी। उनका व्यक्तित्व अनेक दिव्य गुणों से युक्त था। वे बौद्धिक महत्त्वाकांक्षाओं से पूर्ण थे और शास्त्रार्थ के महारथी भी। बहुत कम समय में उनके द्वारा समग्र भारतीय चिन्तन को आंदोलित कर दिया गया, जिसके विरोध में अनेक सामूहिक प्रयत्न सामने आये। वे असाधारण प्रतिभा के आचार्य थे। समग्र अवलोकन से जात होता है कि नौ उपनिषदों (ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, तथा वृहदारण्यक), ब्रह्मसूत्र और गीता पर लिखे गए भाष्य (प्रस्थानत्रयी) उनकी प्रतिभा के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। काव्य तथा स्तोत्रों के रचयिता के रूप में उनकी सृजनात्मक क्षमता का परिचय मिलता है। आनंद लहरी, सौंदर्य लहरी, दक्षिणामूर्ति स्तोत्र तथा हरिमीड़े स्तोत्र इसके प्रमाण हैं। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा लघु तत्त्वज्ञान विषयक रचनाएँ प्रथा अनेक देवी देवताओं व प्रकृति तत्त्वों पर स्मृतियों लिखी गयीं। इन रचनाओं के माध्यम से वे अपनी आध्यात्मिकता, आदर्शवादिता और सक्रिय सामाजिक दृष्टि का भी परिचय देते हैं। आचार्य शंकर की रचनाशीलता से ज्ञात होता है कि उनका मुख्य उद्देश्य वैदिक मत की स्थापना है। वे अपने गुरु से वेदांत के गूढ़ रहस्यों को समझते हैं और उसके क्रियान्वयन के लिए समग्र भारत की यात्रा करते हैं। इसके लिए उन्होंने चार पीठों अथवा मठों की स्थापना की। दक्षिण में श्रृंगेरी, पूर्व में गोवर्धनपीठ (जगन्नाथपुरी), पश्चिम में द्वारका (शारदा पीठ) और उत्तर में बदरीकाश्रम (बदरीनाथ) जिसे ज्योर्तिपीठ कहा जाता हैं और भारत की एकात्मता को प्रदर्शित करते हैं।

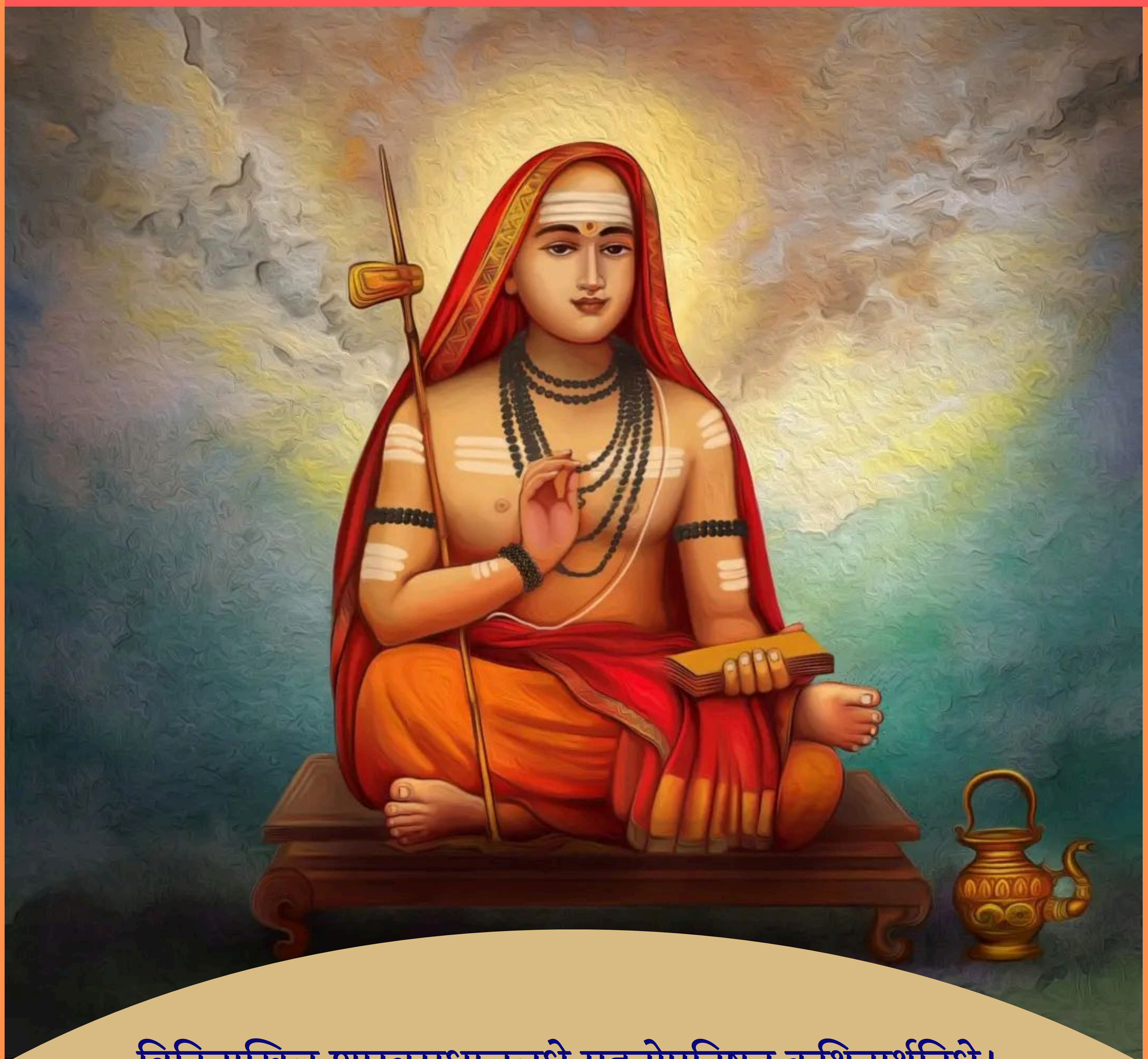

विदिताखिल शास्त्रसुधाजलधे महतोपनिषत् कथितार्थनिधे।
हृदये कलये विमलं चरणं भव शंकर देशिक मे शरणम्।।

हे गूढ़ शास्त्रों के ज्ञाता ! हे गहन शास्त्रों के सूक्ष्मदर्शी विद्वान ! गहरे सम्मान सहित, मैं आपकी पवित्र उपस्थिति के समक्ष नतमस्तक होता हूं एवं आपके पद्मपादों में अत्यंत गहन चिंतन में तल्लीन होता हूं। हे पूज्य गुरु शङ्कर, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे स्वीय दिव्य शरण तथा मार्गदर्शन प्रदान करें।

# यक्ष-युधिष्ठिर संवाद

पांडवजन अपने तेरह-वर्षीय वनवास के दौरान वनों में विचरण कर रहे थे। तब उन्होंने एक बार प्यास बुझाने के लिए पानी की तलाश की। पानी का प्रबंध करने का जिम्मा प्रथमतः सहदेव को सौंप गया। उन्हें पास में एक जलाशय दिखा जिससे पानी लेने वे वहां पहुंचे।

जलाशय के स्वामी अदृश्य यक्ष ने आकाशवाणी के द्वारा उन्हें रोकते हुए पहले कुछ प्रश्नों का उत्तर देने की शर्त रखी। सहदेव उस शर्त और यक्ष को अनदेखा कर जलाशाय से पानी लेने लगे। तब यक्ष ने सहदेव को निर्जीव कर दिया। सहदेव के न लौटने पर क्रमशः नकुल, अर्जुन और फिर भीम ने पानी लाने की जिम्मेदारी उठाई। वे उसी जलाशय पर पहुंचे और यक्ष की शर्तों की अवज्ञा करने के कारण निर्जीव हो गए। अंत में चिंतातुर युधिष्ठिर स्वयं उस जलाशय पर पहुंचे। अदृश्य यक्ष ने प्रकट होकर उन्हें आगाह किया और अपने प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहा। युधिष्ठिर ने धैर्य दिखाया। उन्होंने न केवल यक्ष के सभी प्रश्न ध्यानपूर्वक सुने अपितु उनका तर्कपूर्ण उत्तर भी दिया जिसे सुनकर यक्ष संतुष्ट हो गया। संतुष्ट होने के बाद यक्ष ने क्या किया और क्या थे वे प्रश्न इसे, इसे जानने के लिए अंत तक पढ़ें ...हालांकि प्रश्न तो और भी है लेकिन यहां कुछ ही दिए गए हैं।

यक्ष ने पूछा- “सूर्य को कौन उदित करता है? उसके चारों ओर कौन चलते हैं? उसे अस्त कौन करता है और वह किसमें प्रतिष्ठित है?” युधिष्ठिर ने उत्तर में कहा- “हे यक्ष! सूर्य को ब्रह्म उदित करता है। देवता उसके चारों ओर चलते हैं। धर्म उसे अस्त करता है और वह सत्य में प्रतिष्ठित है।”

यक्ष ने पुनः पूछा- “मनुष्य श्रोत्रिय कैसे होता है? महत पद किसके द्वारा प्राप्त करता है? किसके द्वारा वह द्वितीयवान (ब्रह्मरूप) होता है और किससे बुद्धिमान होता है?”
युधिष्ठिर का उत्तर था- “श्रुति के द्वारा मनुष्य श्रोत्रिय होता है। स्मृति से वह महत प्राप्त करता है। तप के द्वारा वह द्वितीयवान होता है और गुरुजनों की सेवा से वह बुद्धिमान होता है।”

यक्ष का अगला प्रश्न था- “ब्राह्मणों में देवत्व क्या है? उनमें सत्पुरुषों जैसा धर्म क्या है? मानुषी भाव क्या है और असत्पुरुषों का सा आचरण क्या है?”
इन प्रश्नों के उत्तर में युधिष्ठिर बोले- “वेदों का स्वाध्याय ही ब्राह्मणों में देवत्व है। उनका तप ही सत्पुरुषों जैसा धर्म है। मृत्यु मानुषी भाव है और परनिन्दा असत्पुरुषों का सा आचरण है।”

यक्ष ने फिर पूछा- “कौन एक वस्तु यज्ञीय साम है? कौन एक वस्तु यज्ञीय यजुः है? कौन एक वस्तु यज्ञ का वरण करती है और किस एक का यज्ञ अतिक्रमण नहीं करता?”

**यक्ष प्रश्न : कौन हूं मैं?**
**युधिष्ठिर उत्तर : तुम न यह शरीर हो, न इन्द्रियां, न मन, न बुद्धि। तुम शुद्ध चेतना हो, वह चेतना जो सर्वसाक्षी है।**

**यक्ष प्रश्नः जीवन का उद्देश्य क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः जीवन का उद्देश्य उसी चेतना को जानना है जो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है।**

**यक्ष प्रश्नः जन्म का कारण क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः अतृप्त वासनाएं, कामनाएं और कर्मफल ये ही जन्म का कारण हैं।**

**यक्ष प्रश्नः जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त कौन है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया वह जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है।**

**यक्ष प्रश्नः वासना और जन्म का सम्बन्ध क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः जैसी वासनाएं वैसा जन्म। यदि वासनाएं पशु जैसी तो पशु योनि में जन्म। यदि वासनाएं मनुष्य जैसी तो मनुष्य योनि में जन्म।**

**यक्ष प्रश्नः संसार में दुःख क्यों है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः संसार के दुःख का कारण लालच, स्वार्थ और भय हैं।**

**यक्ष प्रश्नः तो फिर ईश्वर ने दुःख की रचना क्यों की?**
**युधिष्ठिर उत्तरः ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दुःख और सुख की रचना की।**

**यक्ष प्रश्नः क्या ईश्वर है? कौन है वह? क्या वह स्त्री है या पुरुष?**
**युधिष्ठिर उत्तरः कारण के बिना कार्य नहीं। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। तुम हो इसलिए वह भी है उस महान कारण को ही आध्यात्म में ईश्वर कहा गया है। वह न स्त्री है न पुरुष।**

**यक्ष प्रश्नः उसका (ईश्वर) स्वरूप क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः वह सत्-चित्-आनन्द है, वह निराकार ही सभी रूपों में अपने आप को स्वयं को व्यक्त करता है।**

यक्ष प्रश्नः वह अनाकार (निराकार) स्वयं करता क्या है?
युधिष्ठिरः वह ईश्वर संसार की रचना, पालन और संहार करता है।

यक्ष प्रश्नः यदि ईश्वर ने संसार की रचना की तो फिर ईश्वर की रचना किसने की?
युधिष्ठिर उत्तरः वह अजन्मा अमृत और अकारण है।

यक्ष प्रश्नः भाग्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है। आज का प्रयत्न कल का भाग्य है।

यक्ष प्रश्नः सुख और शान्ति का रहस्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः सत्य, सदाचार, प्रेम और क्षमा सुख का कारण हैं। असत्य, अनाचार, घृणा और क्रोध का त्याग शान्ति का मार्ग है।

यक्ष प्रश्नः चित्त पर नियंत्रण कैसे संभव है?
युधिष्ठिर उत्तरः इच्छाएं, कामनाएं चित्त में उद्वेग उत्पन्न करती हैं। इच्छाओं पर विजय चित्त पर विजय है।

यक्ष प्रश्नः सच्चा प्रेम क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः स्वयं को सभी में देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सर्वव्याप्त देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सभी के साथ एक देखना सच्चा प्रेम है।

यक्ष प्रश्नः तो फिर मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता?
युधिष्ठिर उत्तरः. जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता वह सभी से प्रेम नहीं कर सकता।

यक्ष प्रश्नः आसक्ति क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः प्रेम में मांग, अपेक्षा, अधिकार आसक्ति है।

यक्ष प्रश्नः नशा क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः आसक्ति।

यक्ष प्रश्नः मुक्ति क्या है?
युधिष्ठिर – अनासक्ति (आसक्ति के विपरित) ही मुक्ति है।
यक्ष प्रश्नः बुद्धिमान कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: जिसके पास विवेक है।

यक्ष प्रश्न: चोर कौन है?
युधिष्ठिर उत्तर: इन्द्रियों के आकर्षण, जो इन्द्रियों को हर लेते हैं चोर हैं।

यक्ष प्रश्न: नरक क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: इन्द्रियों की दासता नरक है।

यक्ष प्रश्न: जागते हुए भी कौन सोया हुआ है?
युधिष्ठिर उत्तर: जो आत्मा को नहीं जानता वह जागते हुए भी सोया है।

यक्ष प्रश्न: कमल के पत्ते में पड़े जल की तरह अस्थायी क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: यौवन, धन और जीवन।

यक्ष प्रश्न: दुर्भाग्य का कारण क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: मद और अहंकार।

यक्ष प्रश्न: सौभाग्य का कारण क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: सत्संग और सबके प्रति मैत्री भाव।

यक्ष प्रश्न: सारे दुःखों का नाश कौन कर सकता है?
युधिष्ठिर उत्तर: जो सब छोड़ने को तैयार हो।

यक्ष प्रश्न: मृत्यु पर्यंत यातना कौन देता है?
युधिष्ठिर उत्तर: गुप्त रूप से किया गया अपराध।

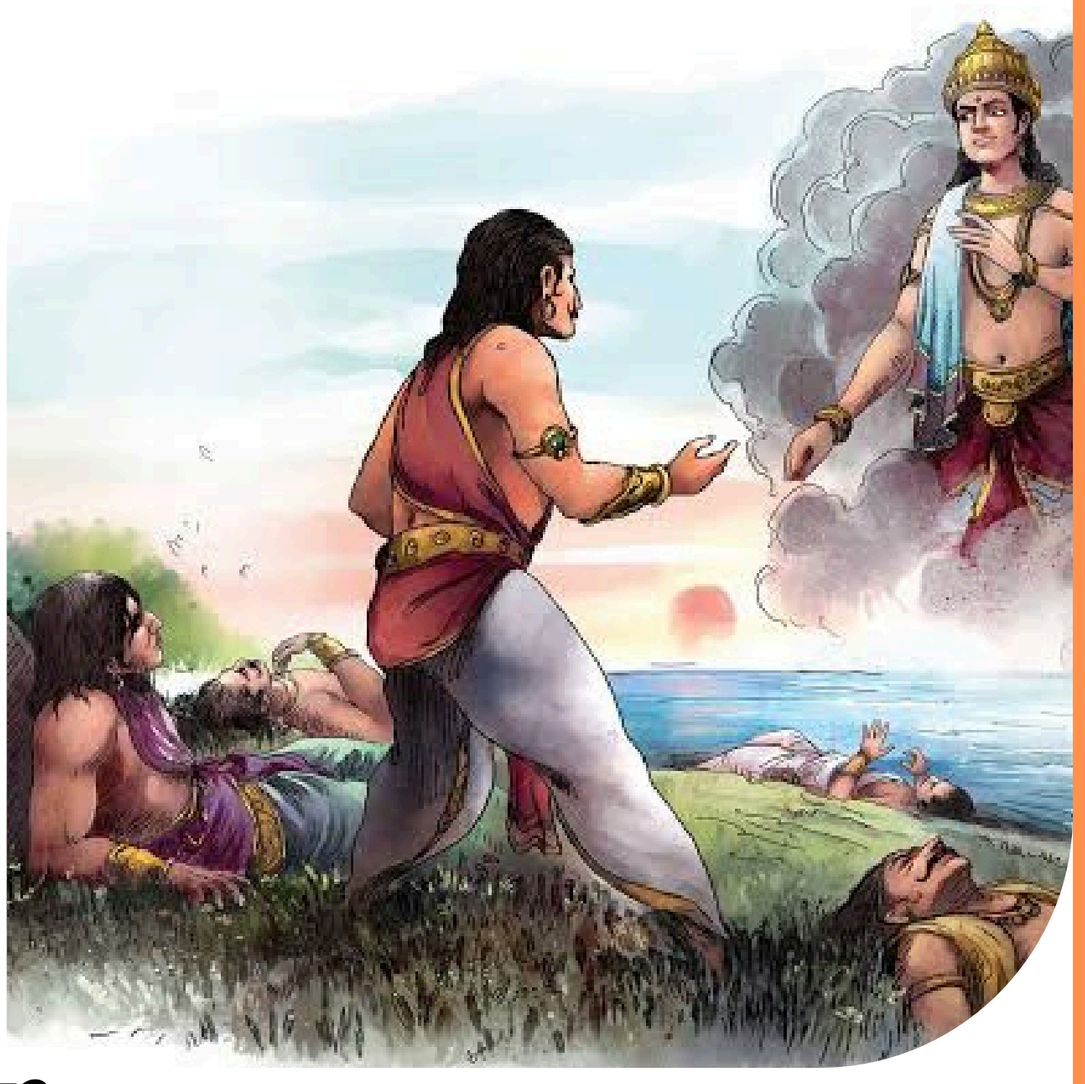

यक्ष प्रश्न: दिन-रात किस बात का विचार करना चाहिए?
युधिष्ठिर उत्तर: सांसारिक सुखों की क्षण-भंगुरता का।

यक्ष प्रश्न: संसार को कौन जीतता है?
युधिष्ठिर उत्तर: जिसमें सत्य और श्रद्धा है।

यक्ष प्रश्न: भय से मुक्ति कैसे संभव है?
युधिष्ठिर उत्तर:  वैराग्य से।

यक्ष प्रश्नः मुक्त कौन है?
युधिष्ठिर उत्तरः जो अज्ञान से परे है।

यक्ष प्रश्नः अज्ञान क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः आत्मज्ञान का अभाव अज्ञान है।

यक्ष प्रश्नः दुःखों से मुक्त कौन है?
युधिष्ठिर उत्तरः जो कभी क्रोध नहीं करता।

यक्ष प्रश्नः वह क्या है जो अस्तित्व में है और नहीं भी?
युधिष्ठिर उत्तरः माया।

यक्ष प्रश्नः माया क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः नाम और रूपधारी नाशवान जगत।

यक्ष प्रश्नः परम सत्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः ब्रह्म।...!

यक्ष प्रश्नः सूर्य किसकी आज्ञा से उदय होता है?
युधिष्ठिर उत्तरः परमात्मा यानी ब्रह्म की आज्ञा से।

यक्ष प्रश्नः किसी का ब्राह्मण होना किस बात पर निर्भर करता है? उसके जन्म पर या शील स्वभाव पर?
युधिष्ठिर उत्तरः कुल या विद्या के कारण ब्राह्मणत्व प्राप्त नहीं हो जाता। ब्राह्मणत्व शील और स्वभाव पर ही निर्भर है। जिसमें शील न हो ब्राह्मण नहीं हो सकता। जिसमें बुरे व्यसन हों वह चाहे कितना ही पढ़ा लिखा क्यों न हो, ब्राह्मण नहीं होता।

यक्ष प्रश्नः मनुष्य का साथ कौन देता है?
युधिष्ठिर उत्तरः धैर्य ही मनुष्य का साथी होता है।

यक्ष प्रश्नः यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि स्थायित्व किसे कहते हैं? धैर्य क्या है? स्नान किसे कहते हैं? और दान का वास्तविक अर्थ क्या है? युधिष्ठिर उत्तरः 'अपने धर्म में स्थिर रहना ही स्थायित्व है। अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना ही धैर्य है। मनोमालिन्य का त्याग करना ही स्नान है और प्राणीमात्र की रक्षा का भाव ही वास्तव में दान है।'

**यक्ष प्रश्नः कौन सा शास्त्र है, जिसका अध्ययन करके मनुष्य बुद्धिमान बनता है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं है। महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है।**

**यक्ष प्रश्नः भूमि से भारी चीज क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः संतान को कोख़ में धरने वाली मां, भूमि से भी भारी होती है।**

**यक्ष प्रश्नः आकाश से भी ऊंचा कौन है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः पिता।**

**यक्ष प्रश्नः हवा से भी तेज चलने वाला कौन है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः मन।**

**यक्ष प्रश्नः  घास से भी तुच्छ चीज क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः चिंता।**

**यक्ष प्रश्न : विदेश जाने वाले का साथी कौन होता है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः विद्या।**

**यक्ष प्रश्न : घर में रहने वाले का साथी कौन होता है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः पत्नी।**

**यक्ष प्रश्न : मरणासन्न वृद्ध का मित्र कौन होता है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः दान, क्योंकि वही मृत्यु के बाद अकेले चलने वाले जीव के साथ-साथ चलता है।**

**यक्ष प्रश्न : बर्तनों में सबसे बड़ा कौन-सा है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः भूमि ही सबसे बड़ा बर्तन है जिसमें सब कुछ समा सकता है।**

**यक्ष प्रश्न : सुख क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः सुख वह चीज है जो शील और सच्चरित्रता पर आधारित है।**

**यक्ष प्रश्न : किसके छूट जाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है ?**
**युधिष्ठिर उत्तरः अहंभाव के छूट जाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है।**
**यक्ष प्रश्न : किस चीज के खो जाने पर दुःख होता है ? युधिष्ठिर उत्तरः क्रोध।**

**यक्ष प्रश्न : किस चीज को गंवाकर मनुष्य धनी बनता है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः लालच को खोकर।**

**यक्ष प्रश्न : संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः हर रोज आंखों के सामने कितने ही प्राणियों की मृत्यु हो जाती है यह देखते हुए भी इंसान अमरता के सपने देखता है। यही महान आश्चर्य है।**

**यक्ष प्रश्न : कौन व्यक्ति आनंदित या सुखी है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः हे जलचर (जलाशय में निवास करने वाले यक्ष), जो व्यक्ति पांचवें-छठे दिन ही सही, अपने घर में शाक (सब्जी) पकाकर खाता है, जिस पर किसी का ऋण नहीं है और जिसे परदेस में नहीं रहना पड़ता है, वही मुदित-सुखी है । यदि युधिष्ठिर के शाब्दिक उत्तर को महत्त्व न देकर उसके भावार्थ पर ध्यान दें, तो इस कथन का तात्पर्य यही है जो सीमित संसाधनों के साथ अपने परिवार के बीच रहते हुए संतोष कर पाता हो वही वास्तव में सुखी है ।**

**यक्ष प्रश्न : इस सृष्टि का आश्चर्य क्या है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः यहां इस लोक से जीवधारी प्रतिदिन यमलोक को प्रस्थान करते हैं, यानी एक-एक कर सभी की मृत्यु देखी जाती है । फिर भी जो यहां बचे रह जाते हैं वे सदा के लिए यहीं टिके रहने की आशा करते हैं । इससे बड़ा आश्चर्य भला क्या हो सकता है ? तात्पर्य यह है कि जिसका भी जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है और उस मृत्यु के साक्षात्कार के लिए सभी को प्रस्तुत रहना चाहिए । किंतु हर व्यक्ति इस प्रकार जीवन-व्यापार में खोया रहता है जैसे कि उसे मृत्यु अपना ग्रास नहीं बनाएगी ।**

**यक्ष प्रश्न : जीवन जीने का सही मार्ग कौन-सा है?**
**युधिष्ठिर उत्तरः जीवन जीने के असली मार्ग के निर्धारण के लिए कोई सुस्थापित तर्क नहीं है, श्रुतियां (शास्त्रों तथा अन्य स्रोत) भी भांति-भांति की बातें करती हैं, ऐसा कोई ऋषि/चिंतक/विचारक नहीं है जिसके वचन प्रमाण कहे जा सकें । वास्तव में धर्म का मर्म तो गुहा (गुफा) में छिपा है, यानी बहुत गूढ़ है । ऐसे में समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति जिस मार्ग को अपनाता है वही अनुकरणीय है । 'बड़े' लोगों के बताये रास्ते पर चलने की बातें अक्सर की जाती हैं । यहां प्रतिष्ठित या बड़े व्यक्ति से मतलब उससे नहीं है जिसने धन-संपदा अर्जित की हो, या जो व्यावसायिक रूप से काफी आगे बढ़ चुका हो, या जो प्रशासनिक अथवा अन्य अधिकारों से संपन्न हो, इत्यादि । प्रतिष्ठित वह है जो चरित्रवान् हो, कर्तव्यों की अवहेलना न करता हो, दूसरों के प्रति संवेदनशील हो, समाज के हितों के प्रति समर्पित हो, आदि-आदि ।**

**यक्ष प्रश्न : रोचक वार्ता क्या है?**

युधिष्ठिर उत्तरः काल (यानी निरंतर प्रवाहशील समय) सूर्य रूपी अग्नि और रात्रि-दिन रूपी इंधन से तपाये जा रहे भवसागर रूपी महा मोहयुक्त कढ़ाई में महीने तथा ऋतुओं के कलछे से उलटते-पलटते हुए जीवधारियों को पका रहा है । यही प्रमुख वार्ता (खबर) है । इस कथन में जीवन के गंभीर दर्शन का उल्लेख दिखता है । रात-दिन तथा मास-ऋतुओं के साथ प्राणीवृंद के जीवन में उथल-पुथल का दौर निरंतर चलता रहता है। प्राणीगण काल के हाथ उसके द्वारा पकाये जा रहे भोजन की भांति हैं, जिन्हें एक न एक दिन काल के गाल में समा जाना है । यही हर दिन का ताजा समाचार है।

इस प्रकार यक्ष ने युधिष्ठिर से और भी अनेक प्रश्न किए और युधिष्ठिर ने उस सभी प्रश्नों के उचित उत्तर दिए।

इससे प्रसन्न होकर यक्ष बोले- “हे युधिष्ठिर! तुम धर्म के सभी मर्मों के ज्ञाता हो। मैं तुम्हारे उत्तरों से सन्तुष्ट हूँ। अतः मैं तुम्हारे एक भाई को जीवनदान देता हूँ। बोलो तुम्हारे किस भाई को मैं जीवित करूँ?”
युधिष्ठिर ने कहा- “आप नकुल को जीवित कर दीजिये।”
इस पर यक्ष बोले- “युधिष्ठिर! तुमने महाबली भीम या त्रिलोक विजयी अर्जुन का जीवनदान न माँगकर नकुल को ही जीवित करने के लिये क्यों कहा?”

युधिष्ठिर ने यक्ष के इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया- “हे यक्ष! धर्मात्मा पाण्डु की दो रानियाँ थीं- कुन्ती और माद्री। मेरी, भीम और अर्जुन की माता कुन्ती थीं तथा नकुल और सहदेव की माद्री। इसलिए जहाँ माता कुन्ती का एक पुत्र मैं जीवित हूँ, वहीं माता माद्री के भी एक पुत्र नकुल को ही जीवित रहना चाहिये। इसीलिये मैंने नकुल का जीवनदान माँगा है।”
युधिष्ठिर के वचन सुनकर यक्ष ने प्रसन्न होते हुए कहा– “हे वत्स! मैं तुम्हारे विचारों से अत्यन्त ही प्रसन्न हुआ हूँ, इसलिये मैं तुम्हारे सभी भाइयों को जीवित करता हूँ। वास्तव में मैं तुम्हारा पिता धर्म हूँ और तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये यहाँ आया था।”
धर्म के इतना कहते ही सब पाण्डव ऐसे उठ खड़े हुए जैसे कि गहरी नींद से जागे हों। युधिष्ठिर ने अपने पिता धर्म के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया।
फिर धर्म ने कहा- “वत्स मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिए तुम मुझसे अपनी इच्छानुसार वर माँग लो।”

युधिष्ठिर बोले- “हे तात! हमारा बारह वर्षों का वनवास पूर्ण हो रहा है और अब हम एक वर्ष के अज्ञातवास में जाने वाले हैं। अतः आप यह वर दीजिए कि उस अज्ञातवास में कोई भी हमें न पहचान सके। साथ ही मुझे यह वर दीजिए कि मेरी वृति सदा आप अर्थात धर्म में ही लगी रहे।”
धर्म युधिष्ठिर को उनके माँगे हुए दोनों वर देकर वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गए।

# वीर बाजी राउत

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के ऐसे ही एक वीर सपूत बाजी राउत की जिन्होंने महज 12 वर्ष की आयु में अंग्रेजों का प्रतिकार किया। जिनके बुलंद हौसलों को अंग्रेजों की गोलियां भी डिगा न सकीं। भारतीय इतिहास में उनका नाम सबसे कम उम्र के बलिदानी के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। बाजी राउत का जन्म 5 अक्टूबर, 1926 को ओडिशा के ढेंकनाल में हुआ था। उनके पिता हरि राउत पेशे से नाविक थे। जन्म के कुछ वर्ष पश्चात ही पिता का देहावसान हो गया। पालन-पोषण मां द्वारा किया गया। उस समय ढेंकनाल के राजा शंकर प्रताप सिंह देव अंग्रेजों के स्वामी-भक्त थे। अतएव शंकर प्रताप ने अंग्रेजों के आदेश पर ढेंकनाल की जनता पर क्रूरता एवं शोषण की सारी हदें पार कर दीं। इससे लोगों में राजा और अंग्रेजों के खिलाफ आक्रोश बढ़ता ही गया। उसी समय भारतीय रेल विभाग में एक नवयुवक वैष्णव चरण पटनायक पेंटर की नौकरी करते थे। उनके द्वारा यह नौकरी करने का मूल उद्देश्य रेलवे के पास पर निश्शुल्क देशाटन एवं क्रांति की गूंज को प्रसारित करना था। पटनायक ने जनमानस को एकजुट करने का बीड़ा उठाया। इस कार्य को क्रियान्वित करने के उद्देश्य से उन्होंने एक क्रांतिकारी दल 'प्रजामंडल' का गठन किया। इस दल में 'वानर सेना' नामक एक टोली भी थी, जिसमें नन्हे बालकों को अंग्रेजों के प्रतिकार की शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजों के विरुद्ध जनमानस की एकजुटता देखकर अंग्रेज सैन्य अधिकारियों ने राजा शंकर प्रताप की सहायता के लिए करीब ढाई सौ सैनिकों की टुकड़ी भेजी, जो अत्याधुनिक शस्त्रों से युक्त थी।

10 अक्टूबर, 1938 को अंग्रेज सिपाहियों द्वारा गांव के कुछ लोगों को पकड़कर भुवनेश्वर लाया गया। उनकी रिहाई के लिए थाने के बाहर प्रदर्शनकारियों का जनसैलाब उमड़ पड़ा। प्रदर्शन को शांत करने के लिए पुलिस ने गोलियां चलाईं, जिसमें दो प्रदर्शनकारियों की मृत्यु हो गई। इससे ग्रामीणों का आक्रोश और बढ़ गया। यह देख अंग्रेज सैनिक टुकड़ियों ने बिना समय गवाएं वहां से भागने का निर्णय किया। अंग्रेज सैनिक ढेंकनाल की ओर भागने का प्रयास कर रहे थे। जब वे ब्राह्मणी नदी के नीलकंठ घाट पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि घाट के किनारे एक नन्हा बालक नाव पर बैठा हुआ है। दरअसल, सैनिक जिसे नन्हा बालक समझ रहे थे, वह प्रजामंडल से दीक्षित वानर सेना का नन्हा वीर बाजी राउत था जो वहां पहरा दे रहा था। अंग्रेज सैनिकों ने बाजी से अपनी नाव से उन्हें नदी पार करा दे। जवाब में बाजी ने कोई उत्तर नहीं दिया।
दोबारा वही प्रश्न पूछे जाने पर बाजी ने न केवल नदी पार कराने से साफ इंकार कर दिया, बल्कि अपने प्रजामंडल के क्रांतिकारियों को आगाह करने के लिए जोर-जोर से चिल्लाने भी लगा। उसे ऐसा करते देख एक अंग्रेज सैनिक ने बाजी के सिर पर बंदूक की बट से वार किया।

उसके सिर से रक्त की धार बहने लगी। पर इससे विचलित हुए बिना निरंतर शोर मचाकर वह अपने लोगों को आगाह करता रहा। इस पर दूसरे सैनिक ने बाजी पर पुनः वार किया। जब उसका चिल्लाना नहीं रुका, तो तीसरे सैनिक ने उसे गोली मार दी।

बाजी हमेशा के लिए शांत हो गया, किंतु उसके शोर की गूंज सुन कई साथी क्रांतिकारी घाट पर पहुंचे। भीड़ आती देख अंग्रेज सैनिक घबराहट में स्वयं नाव चलाकर भाग गए। प्रजामंडल के संस्थापक वैष्णव चरण पटनायक बाजी के मृत शरीर को रेलगाड़ी से कटक ले गए। सबसे कम उम्र में मातृभूमि की खातिर बलिदान देने वाले उस वीर की शव-यात्रा में हजारों लोग सम्मिलित हुए। एक लेखक ने उनके अंतिम संस्कार में सम्मिलित होने के पश्चात लिखा: 'बंधु यह चिता नहीं है, यह देश का अंधेरा मिटाने की मुक्ति की मशाल है।'

(साभार: दैनिक जागरण)

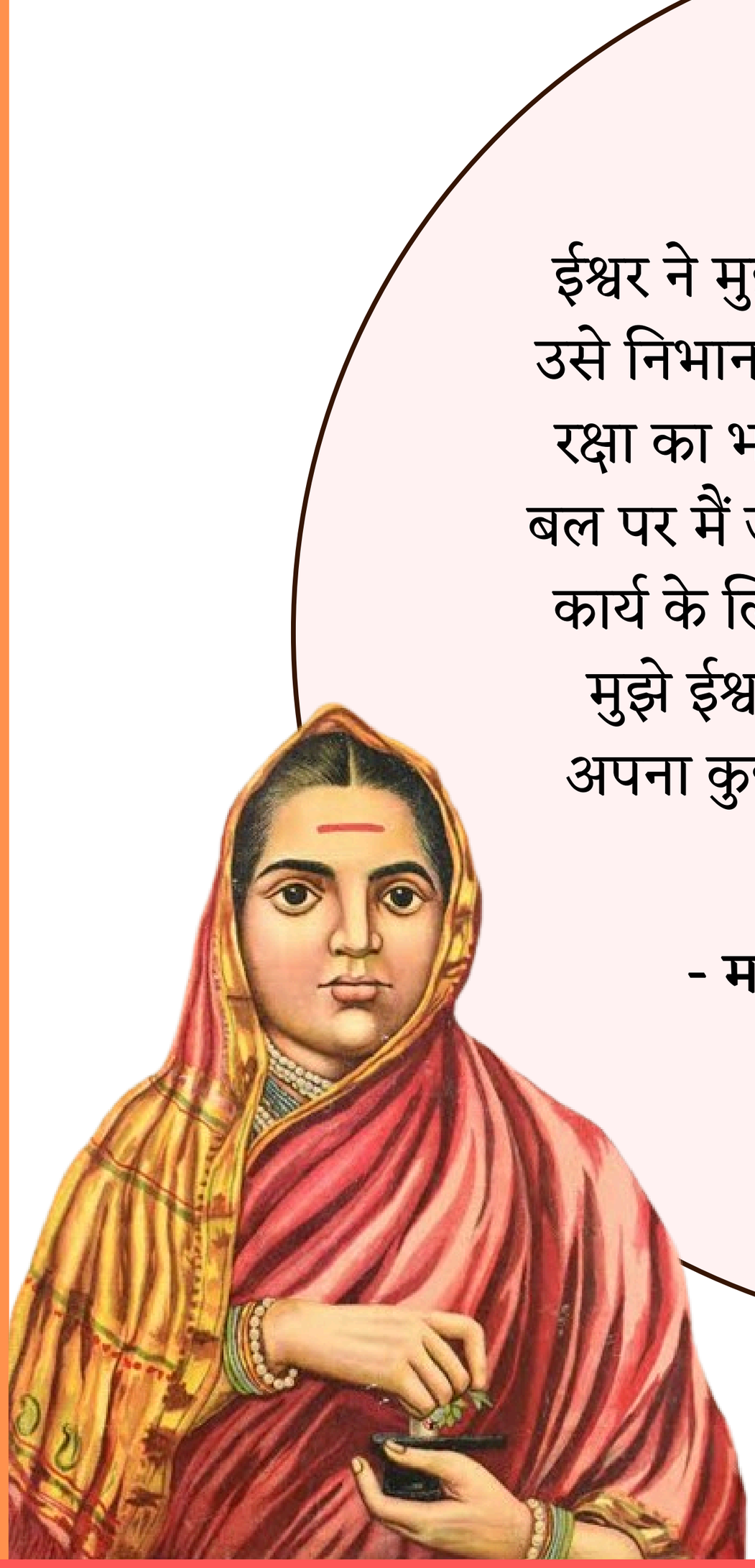

ईश्वर ने मुझ पर जो जिम्मेदारी सौंपी है, मुझे उसे निभाना है। प्रजा को सुखी रखने व उनकी रक्षा का भार मुझ पर है। सामर्थ्य व सत्ता के बल पर मैं जो कुछ भी यहां कर रही हूं, उस हर कार्य के लिए मैं जिम्मेदार हूँ, जिसका जवाब मुझे ईश्वर के समक्ष देना होगा। यहां मेरा अपना कुछ भी नहीं, जिसका है मैं उसी को अर्पित करती हूं।

**- महारानी अहिल्याबाई होल्कर**

# धूर्त गीदड़ एवं कर्पूरतिलक हाथी

ब्रह्मवन में कर्पूरतिलक नाम का एक हाथी रहता था । उसको देखकर एक बार सब सियारों ने सोचा कि यदि किसी प्रकार यह हाथी मर जाये तो उसके मृत शरीर से चार मास तक उनके भोजन की व्यवस्था हो सकती है। तब यह विचार होने लगा कि उसको मारा किस प्रकार जाये ? उसी समय एक वृद्ध सियार ने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपने बुद्धि बल से इसको मार डालूंगा ।"

यह प्रतिज्ञा करके वह धूर्त सियार कर्पूर तिलक के समीप गया और उसको साष्टांग प्रणाम कर बोला, "देव, मुझ पर दया दृष्टि कीजिये। "कहो क्या बात है ?" हाथी ने पूछा ।

"मैं तो सियार हूं। किन्तु यहां के सब वनवासी पशुओं ने मिलकर मुझे आपके पास भेजा है। उनका कहना है कि राजा के बिना इस वन में रहना भयावह है। सो राज्यपद पर अभिषेक करने योग्य सारे गुण आपमें ही पाये गये हैं।

"क्योंकि जो कुल, गांव और आचार में अत्यन्त पवित्र, प्रतापी, धर्मात्मा और नीति का ज्ञाता हो स्वामी तो ऐसा ही होना चाहिए।" और भी कहा गया है कि प्रथम तो अच्छे राजा की, उसके बाद अच्छी पत्नी की, फिर उसके बाद अच्छे धन की इच्छा करनी चाहिए। क्योंकि राजा यदि नहीं हुआ तो मार्ग और धन की रक्षा किस प्रकार संम्भव होगी। जिस प्रकार मेघ जगत् के सब प्राणियों का आधार है उसी प्रकार राजा भी है। मेघ के न बरसने पर तो मनुष्य किसी प्रकार जीवित रह सकता है किन्तु यदि राजा न हुआ तो फिर किसी प्रकार भी जीवित रहना सम्भव नहीं है।

"इस पराधीन संसार में प्रायः सभी जन एकमात्र दण्ड के भय से ही अपने-अपने काम पर लगे रहते हैं। अपनी इच्छा से सदाचार का व्रत पालन करने वाले सज्जन मनुष्य भी अत्यन्त दुर्लभ हैं । दुर्बल, व्याकुल, रोगी और दरिद्र पति को भी स्त्रियां दंड के भय से ही स्वीकार कर लेती हैं।

"अतः आपसे प्रार्थना है कि आप तुरन्त पधारिये जिससे कि शुभ मुहूर्त टल न जाये।" हाथी ने जब यह सुना तो वह उठा और उस सियार के साथ चल दिया। राज्य का लोभ ऐसा था कि वह समझ नहीं पाया कि सियार जैसा धूर्त प्राणी ही उसको बुलाने के लिए क्यों आया है। सियार उसको ऐसे मार्ग से लेगा जो गहरे दलदल वाला था। हाथी उस दलदल में फंस गया तो कहने लगा, "मित्र सिर! अब किया किया जाये ? मैं तो इस दलदल में फंसकार मरने लगा हूं।"

सियार बोला, "आप मेरी पूंछ पकड़कर निकल आइये ।"

फिर हँसकर बोला कि तुमने मुझ जैसे सियार की बात पर विश्वास कर लिया अब उसका फल भोगो।

कहा भी है कि जब-जब कोई सज्जनों का साथ छोड़ता है तब-तब वह दुर्जनों के जमघट में जा पड़ता है। उससे किसी प्रकार भी बच नहीं सकता।

हाथी उसी दलदल में फंसा रह गया और उसका प्राणान्त भी हो गया। सियारों ने आनन्द से उसका भोग किया। इसीलिए कहा गया है कि जो काम परिश्रम से नहीं हो सकता वह उपाय से सहज सिद्ध होता है।

(स्रोतः हितोपदेश)

**है सत्य की विजय, निश्चय बात जानी,**
**है जन्मभूमि जिनको जननी समान,**
**स्वातंत्र्य है प्रिय जिन्हें शुभ स्वर्ग से भी**
**अन्याय की जकड़ती कटु बेड़ियों को**
**विद्वान वे कब समीप निवास देंगे?**

(चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की काव्य रचना 'झुकी कमान' का अंश)

# अंतरंग शिष्य

श्रीरामकृष्ण बलराम के दुमँजले के बैठकखाने में भक्तों के बीच में प्रसन्नतापूर्वक बैठे हुए उनसे वार्तालाप कर रहे हैं। नरेन्द्र, मास्टर, भवनाथ, पूर्ण, पसरतापूर्वक बैठे है गिरीश, रामबाबू, द्विज, विनोद आदि बहुत से भक्त चारों ओर से घेरकर बैठे हुए हैं। बलराम घर में नहीं हैं। शरीर अस्वस्थ होने के कारण वायुपरिचक्षेरकर लिए मुंगेर गये हुए हैं। उनकी बड़ी कन्या ने श्रीरामकृष्ण और भक्तों को बुलाकर महोत्सव किया है। भोजन के पश्चात् श्रीरामकृष्ण जरा विश्राम कर रहे हैं। श्रीरामकृष्ण मास्टर से बार-बार पूछ रहे हैं, 'बताओ तो सही, क्या मैं उदार

हैं?' भवनाथ ने हँसकर कहा, 'ये और क्या कहेंगे, चुप रहने के सिवा?'

एक भक्त - महाराज, कृपा किस तरह होती है? श्रीरामकृष्ण – ईश्वर बालस्वभाव हैं, जैसे कोई लड़का अपनी धोती के पल्ले में रत्न भरे बैठा हो। कितने ही आदमी रास्ते से चले जा रहे हैं। उससे बहुतेरे रत्न माँग रहे है, परन्तु वह कपड़े में हाथ डाले हुए कहता है, 'नहीं, मैं न दूँगा।' पर किसी एक ने चाहा ही नहीं, अपने रास्ते चला जा रहा है। उसके पीछे दौड़कर उसने उसकी स्वयं खुशामद करके उसे रत्न दे दिये।

"त्याग के बिना ईश्वर नहीं मिलते।

"मेरी बात कौन लेता है? मैं आदमी खोज रहा हूँ - अपने भाव का आदमी। जिसे अच्छा भक्त देखता हूँ, उसके लिए सोचता हूँ कि वह शायद मेरा भाव ले सके। फिर देखता हूँ, वह एक दूसरे ढंग का हो जाता है।

"मथुरबाबू को भावावेश हुआ। वे सदा मतवाले की तरह रहते थे - कोई काम न कर सकते थे। तब लोग कहने लगे, 'इस तरह रहोगे तो जायदाद कौन सम्हालेगा? छोटे भट्टाचार्य (श्रीरामकृष्ण) ने ही कोई यन्त्र-मन्त्र किया होगा।'

नरेन्द्र जब पहले-पहल आया था, तब इसकी छाती पर हाथ रखते ही यह बेहोश हो गया। फिर होश में आकर रोते हुए कहने लगा- 'अजी, मुझे तुमने ऐसा क्यों कर दिया? – मेरे बाबूजी हैं- मेरी माँ जो हैं। 'मेरा-मेरा' करना, वह अज्ञान से होता है।

नरेन्द्र Proof (प्रमाण) के बिना कैसे विश्वास करूं कि ईश्वर आदमी हो आते हैं? गिरीश - विश्वास ही Sufficient Proof (यथेष्ट प्रमाण) है। यह वस्तु यहाँ है, इसका क्या प्रमाण है? विश्वास ही इसका प्रमाण है।

एक भक्त - External World (बहिर्जगत्) बाहर है, इस बात को क्या कोई Philosopher (दार्शनिक) Prove (प्रमाणित) कर सका है? केवल कहा है। Irresistible Belief (अनिवार्य विश्वास)।

गिरीश - (नरेन्द्र से) - ईश्वर सामने आने पर भी तो तुम विश्वास नहीं करोगे। यदि ईश्वर कहेंगे, 'मैं ईश्वर हूँ, मनुष्य के शरीर में आया हुआ हैं' तुम शायद कहोगे कि वे झूठ बोल रहे हैं धोखा दे रहे हैं।

योगीन्द्र - (गिरीश आदि भक्तों से, सहास्य) नरेन्द्र की बातों में चे (श्रीरामकृष्ण) अब नहीं आते।

श्रीरामकृष्ण - यदु मल्लिक के बगीचे में नरेन्द्र ने कहा, 'तुम ईश्वर के रूप जितने देखते हो, सब तुम्हारे मन का भ्रम है।' तब आश्चर्य में आकर मैंने उससे कहा, 'क्यों रे, वे बातचीत जो करते हैं।' नरेन्द्र ने कहा, 'मनुष्य ऐसा ही सोचता है।' तब माँ के पास आकर मैं रोने लगा। कहा, 'माँ यह क्या हुआ? – क्या सब झूठ है? नरेन्द्र ऐसी बातें कहता है।' तब माँ ने दिखलाया, चैतन्य - अखण्ड चैतन्य - चैतन्यमय रूप। और उन्होंने कहा, 'अगर ये बातें झूठ होंगी, तो ये सब मिलती किस तरह हैं?' तब मैंने नरेन्द्र से कहा, 'साला, तूने अविश्वास पैदा कर दिया था। तू साला अब यहाँ मत आना।'

फिर विचार होने लगा। नरेन्द्र विचार कर रहे हैं। नरेन्द्र की उम्र इस समय बाईस वर्ष चार मास की है।

नरेन्द्र (गिरीश, मास्टर आदि से) शास्त्रों पर भी कैसे विश्वास करूँ? महानिर्वाण-तन्त्र एक बार तो कहता है, ब्रह्मज्ञान के बिना नरक होगा। फिर कहता है, पार्वती की उपासना को छोड़ और उपाय नहीं। मनुसंहिता में मनुजी कुछ लिखते हैं - वे उन्हीं की अपनी बातें हैं। Moses (मूसा) लिखते हैं Pentateuch (पेन्टट्यूच),- उसमें भी उन्होंने अपनी ही मृत्यु का वर्णन लिखा है।

"सांख्यदर्शन लिखते हैं, 'ईश्वरासिद्धेः', ईश्वर हैं यह कोई प्रमाणित नहीं कर सकता। फिर कहते हैं, वेद मानना चाहिए, वेद नित्य हैं।

"इससे मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि ये सब नहीं हैं। मैं समझ नहीं सकता, मुझे समझा दो। शास्त्रों का अर्थ जिसके जी में जैसा आया उसने वैसा ही किया है। अब मैं किस-किसका ग्रहण करूँ? White light (सफेद रोशनी) Red medium लाल शीशे) के भीतर से आती है तो लाल दीख पड़ती है और Green Medium (हरे शीशे) के भीतर से आती है तो हरी दीख पड़ती है।

एक भक्त गीता भगवान की उक्ति है।

श्रीरामकृष्ण - गीता सब शास्त्रों का सार है। संन्यासी के पास और चाहे कुछ व रहे, परन्तु एक छोटी-सी गीता जरूर रहेगी। एक भक्त गीता श्रीकृष्ण की उक्ति है।

नरेन्द्र - श्रीकृष्ण की उक्ति है या दूसरे किसी की।

श्रीरामकृष्ण निर्वाक रहकर नरेन्द्र की ये सब बातें सुन रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण - ये सब अच्छी बातें हो रही हैं।

"शास्त्रों के दो अर्थ हैं, एक शब्दार्थ और दूसरा मर्मार्थ। ग्रहण मर्मार्थ का ही करना चाहिए, जो अर्थ ईश्वर की वाणी के साथ मिलता हो। चिट्ठी की बातों में, और जिसने चिट्ठी लिखी है उसकी बातों में बड़ा अन्तर है। शास्त्र है - चिट्ठी की बाते। ईश्वर की वाणी है- उनके मुख की बातें। मैं उस बात को ग्रहण नहीं करता जो माँ की बात से नहीं मिलती।"

अब अवतार की बात होने लगी।

नरेन्द्र - ईश्वर पर विश्वास होने से ही होगा। फिर वे कहाँ झूल रहे हैं, या क्या कर रहे हैं इससे हमें क्या काम ? ब्रह्माण्ड अनन्त है और अवतार भी अनन्त है।

नरेन्द्र की यह बात सुनकर श्रीरामकृष्ण ने हाथ जोड़ उन्हें नमस्कार करके कहा 'अहा!'

मणि भवनाथ से कुछ कह रहे हैं।

भवनाथ - ये कहते हैं, हाथी को जब हमने नहीं देखा तो वह सुई के छेद के अन्दर से जा सकता है या नहीं, यह हमें कैसे विश्वास हो? ईश्वर को हम जानते नहीं, फिर वे आदमी के रूप में अवतार ले सकते हैं या नहीं, किस तरह हम इसका विचार करके समझें?

श्रीरामकृष्ण - सब कुछ है। वे जादू चला देते हैं। बाजीगर गले में छूरी मार लेता है, उसे फिर निकाल लेता है। कंकड़-पत्थर खा जाता है।

भक्त - ब्रह्मसमाज के आदमी कहते हैं, संसार में कर्म करना ही अपना कर्तव्य है। इस कर्म के त्याग करने से कुछ न होगा।

गिरीश - मैंने देखा, 'सुलभसमाचार' में यही बात लिखी है। परन्तु ईश्वर को जानने के लिए जो कर्म है, वे ही तो पूरे नहीं हो पाते, फिर ऊपर से दूसरे कर्म! श्रीरामकृष्ण जरा मुस्कराकर मास्टर की ओर देखकर इशारा कर रहे है - 'वह जो कुछ कहता है, वही ठीक है।'

मास्टर समझ गये, कर्मकाण्ड बड़ा ही कठिन है। पूर्ण आये है।
श्रीरामकृष्ण - किसने तुम्हें खबर दी?
पूर्ण - शारदा ने।
श्रीरामकृष्ण - (पास की स्त्री-भक्तों से) - इसे कुछ जलपान करने के लिए देना।

अब नरेन्द्र का गाना होगा। श्रीरामकृष्ण तथा भक्तों की सुनने की इच्छा है। नरेन्द्र गा रहे हैं- (१) "परवत पाथार। व्योमे जागो रुद्र उद्यत बाज। देव-देव महादेव, कालकाल महाकाल, धर्मराज शंकर शिव तारो हर पाप।"

नारायण के अनुरोध करने पर नरेन्द्र ने फिर गाया।
(भावार्थ) - "ऐ हृदयरमा माँ- प्राणों की पुतली! आओ, तुम हृदय के आसन पर आसीन हो जाओ, मैं दृष्टि को तृप्त करता हुआ तुम्हें देखूँ। जन्म से ही मैं तुम्हारा मुँह जोह रहा हूँ। ऐ माँ, तुम जानती हो, मैं कितना दुःख भोग चुका हूँ। ऐ आनन्दमयी, एक बार तो हृदय-पद्म को विकसित करके वहाँ अपना प्रकाश दिखा दो।"

श्रीरामकृष्ण को भावावेश हुआ है। उत्तरास्य हो, दीवारके सहारे, पैर लटकाये हुए तकिये पर बैठे हुए हैं। चारों ओर भक्तगण बैठे हैं। क्रमशः श्रीरामकृष्ण को बाह्य संसार का ज्ञान हो रहा है।

सन्ध्या हुए बड़ी देर हो गयी। बलराम के बैठकखाने में दिये जल रहे हैं। श्रीरामकृष्ण अब भी भावमग्न हैं। भावावेश में कह रहे हैं - यहाँ और कोई नहीं हैं, इसीलिए तुम लोगों से कह रहा हूँ, आन्तरिकता के साथ जो मनुष्य ईश्वर को जानना चाहेगा, उसका उद्देश्य सफल होगा। जो व्याकुल है, ईश्वर के सिवा और कुछ नहीं चाहता, वह उन्हें अवश्य ही पाएगा।

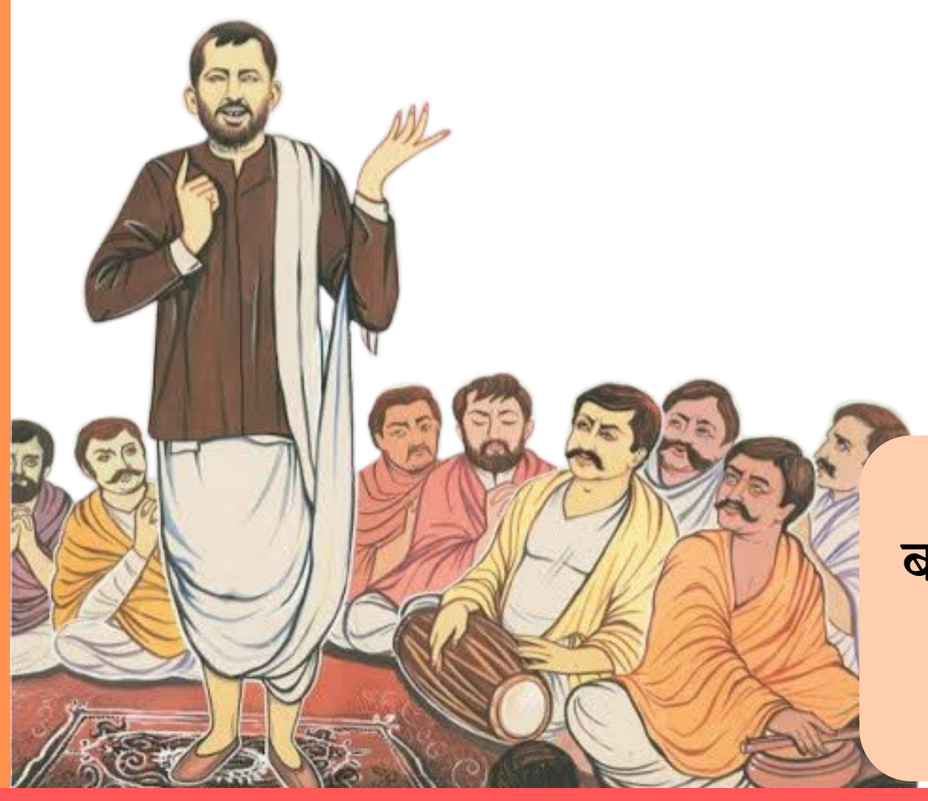

"बारिश का पानी ऊंचाई पर नहीं ठहरता और ढलान पर बहकर नीचे जाता है, ऐसे ही ज्ञान भी घमंड में ऊंचे उठे सिर में नहीं ठहरता।

- रामकृष्ण परमहंस

# प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक

भारत में खगोल, गणित, ज्योतिष, भौतिकी, रसायन विज्ञान, चिकित्सा, धातु व भवन निर्माण आदि क्षेत्रों में चहुंमुखी प्रगति हुई थी। जिस समय यूरोप में घुमक्कड़ जातियां बस्तियां बसाना सीख रही थीं, उस समय भारत में वैज्ञानिक प्रयोग, कृषि, भवन-निर्माण, धातु-विज्ञान, वस्त्र-निर्माण, परिवहन-व्यवस्था आदि क्षेत्र अत्यंत उन्नत दशा में थे। देश में विज्ञान की यह प्रगति यात्रा ईसा पूर्व 200 से ईसा के बाद लगभग 11वीं सदी तक आर्यभट, वराह मिहिर, ब्रह्मगुप्त, बौधायन, चरक, सुश्रुत, अगत्स्य, नागार्जुन, भारद्वाज व व कणाद जैसे भारतीय वैज्ञानिकों के उन्नत शोधों व आविष्कारों के साथ जारी रही। भारत को 'विश्व गुरु' और 'सोने की चिड़िया' जैसे विशेषण यूं ही नहीं मिले थे।

• महर्षि अगस्त्य

आधुनिक विज्ञान थॉमस एल्वा एडिसन को बिजली का आविष्कारक मानता है। पर कम ही लोग जानते होंगे कि इसके अविष्कारक ऋषि अगस्त्य थे, जिनकी गणना सप्तर्षियों में की जाती है। उनके ग्रंथ 'अगस्त्य संहिता' में विद्युत उत्पादन से संबंधित एक आश्चर्यजनक सूत्र है। वर्ष 1891 में पुणे से इंजीनियरिंग करने के बाद प्राचीन भारतीय ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक सूत्रों के अध्ययन व विश्लेषण में पूरा जीवन खपा देने वाले भारतीय विद्वान राव साहब कृष्णाजी वझे को उज्जैन में दामोदर त्र्यम्बक जोशी के पास शक संवत् 1550 के अगस्त्य संहिता के कुछ पन्ने मिले। इन पन्नों में यह सूत्र अंकित था

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छिखिग्रीवेन चार्दाभिः काष्ठापांसुभिः॥
दस्तालोष्टो निधात्वयः पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम्॥

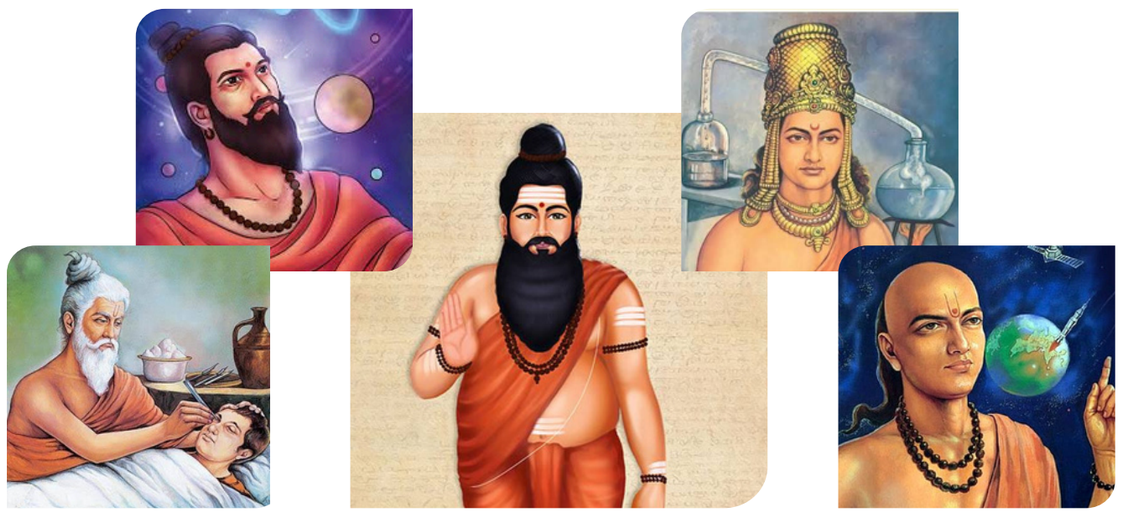

अर्थात् एक मिट्टी का पात्र लें, उसमें पहले ताम्र पट्टिका डालें। फिर शिखि ग्रीवा डालें और बीच में लकड़ी का गीला बुरादा डालने के बाद पारे का प्रयोग कर ताम्र पट्टिका के तारों को मिलाने पर 'मित्र वरुणशक्ति' का उदय होगा। इसे पढ़कर उन्हें लगा कि यह 'डेनियल सेल' से मिलता-जुलता है। लिहाजा, वे नागपुर में संस्कृत के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.सी. सहस्रबुद्धे से मिले तो उन्होंने नागपुर में इंजीनियरिंग के प्राध्यापक पी.पी. होले को इस सूत्र की सत्यता जांचने को कहा। उपर्युक्त वर्णन के आधार पर होले तथा उनके मित्र ने तैयारी शुरू की। उन्होंने सारी सामग्री तो जुटा ली, पर शिखि ग्रीवा समझ में नहीं आया। संस्कृत कोश में देखने पर इसका अर्थ मिला-मोर की गर्दन। इसके बाद वे एक आयुर्वेदाचार्य से मिले।

वे सारी बात सुन हंसकर बोले, "यहां शिखि ग्रीवा का अर्थ मोर की गर्दन नहीं, अपितु उसकी गर्दन के रंग जैसा पदार्थ कॉपर सल्फेट है।" समस्या हल हो गई और इस आधार पर निर्मित इलेक्ट्रिक सेल का प्रदर्शन 7 अगस्त, 1990 को स्वदेशी विज्ञान संशोधन संस्था, नागपुर के चौथे वार्षिक अधिवेशन में किया गया था।

• महर्षि कणादः

इसी तरह, परमाणु बम का आविष्कारक जे. ओपनहाइमर रॉबर्ट तथा अणु सिद्धांत का जनक जॉन डाल्टन को माना जाता है। लेकिन महर्षि कणाद ने डाल्टन से लगभग 2400 वर्ष पूर्व ही पदार्थ की रचना संबंधी सिद्धांत को उजागर कर दिया था। सर्वप्रथम कणाद ने ही परमाणु को पदार्थ की लघुतम अविभाज्य इकाई के रूप स्थापित किया। 'वैशेषिक दर्शन सूत्र' के 10वें अध्याय में पदार्थ के सूक्ष्मतम कण की व्याख्या करते हुए कणाद लिखते हैं, 'दृष्टानां दृष्ट प्रयोजनानां दृष्टाभावे प्रयोगोऽभ्युदयाय' अर्थात् प्रत्यक्ष देखे हुए और अन्य को दिखाने के उद्देश्य से या स्वयं और अधिक गहराई से ज्ञान प्राप्त करने हेतु रखकर किए गए प्रयोगों से अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त होता है। उनके ग्रंथ 'वैशेषिक सूत्र' में परमाणुओं को सतत गतिशील बताया गया है तथा द्रव्य के संरक्षण की भी बात कही गई है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि परमाणु कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते तथा एक प्रकार के दो परमाणु संयुक्त होकर 'द्विणुक' का निर्माण भी कर सकते हैं और अलग-अलग पदार्थों के परमाणु आपस में संयुक्त भी हो सकते हैं। 'इंडियन विजडम' के पृष्ठ 155 पर विख्यात यूरोपीय इतिहासकार टीएन कोलबुर्क ने लिखा है कि ईसा पूर्व 600 में एक भारतीय मनीषी कणाद मुनि द्वारा प्रस्तुत परमाणु संबंधी प्रतिपादन आश्चर्यजनक रूप से जॉन डाल्टन की संकल्पना से मेल खाता है। अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि कणाद के लिखे वैदिक सूत्रों के आधार पर ही कालांतर में डाल्टन ने परमाणु सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

• आचार्य नागार्जुनः

प्राचीन भारत के महान रसायन शास्त्री आचार्य नागार्जुन के बारे में बिनॉय कुमार सरकार की पुस्तक 'हिंदू एचीवमेंट इन एक्जैक्ट साइंसेज' में बताया गया है कि नागार्जुन ने पारे के गुण-धर्म पर 12 वर्ष तक गहन शोध करने के बाद पारे से सोना बनाने का सूत्र विकसित किया था। उन्होंने कच्चे जस्ते से शुद्ध जस्ता प्राप्त करने की आसवन की विधि ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में ही विकसित कर ली थी जिसके उपकरण व प्रमाण राजस्थान के जवर क्षेत्र की खुदाई के दौरान मिले थे। सोना, चांदी, लोहा, तांबा, सीसा, टीन एवं कांसा आदि धातुओं से बर्तन बनाने तथा स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह, अभ्रक व पारा आदि से औषधि भस्म बनाने की विधि का वर्णन आचार्य नागार्जुन के 'रस रत्नाकर' व 'रसेंद्र मंगल' ग्रंथ में मिलता है। उन्होंने 'रस रत्नाकर' में धातु परिष्करण की आसवन, भंजन आदि विधियों का विस्तार से वर्णन किया है। इसमें बताया गया है कि उन्होंने चिकित्सकीय ज्ञान से कुष्ठ जैसे कई असाध्य रोगों की औषधियां भी तैयार की थी।

• महर्षि चरकः
आयुर्वेद के आचार्य महर्षि चरक ने ई.पू. 300-200 में आयुर्वेद के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'चरक संहिता' की रचना की थी। इन्हें त्वचा चिकित्सक भी माना जाता है। उन्होंने शरीरशास्त्र, गर्भशास्त्र, रक्ताभिसरण शास्त्र, औषधिशास्त्र आदि पर गहन शोध किया तथा मधुमेह, क्षयरोग, हृदय विकार जैसे रोगों के निदान व औषधोपचार का अमूल्य ज्ञान दिया।

उन्होंने रोगों के निदान के उपाय और उससे बचाव का तरीका बताया। साथ ही, अपने ग्रंथ में इस तरह की जीवनशैली का वर्णन किया, जिससे कोई रोग- शोक न हो। 8वीं सदी में चरक संहिता का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ और वहां से यह पश्चिमी देशों तक पहुंचा।

महर्षि सुश्रुतः
सर्जरी के आविष्कारक महर्षि सुश्रुत ने 2500 साल पहले उस समय के वैज्ञानिकों के साथ प्रसव, मोतियाबिंद, कृत्रिम अंग लगाना, पथरी का इलाज और प्लास्टिक सर्जरी जैसी कई जटिल शल्य चिकित्सा के सिद्धांत प्रतिपादित किए। आधुनिक विज्ञान मात्र 400 वर्ष पूर्व से शल्य क्रिया कर रहा है। सुश्रुत के पास अपने बनाए उपकरण थे, जिन्हें वे उबालकर प्रयोग करते थे। उनकी 'सुश्रुत संहिता' में शल्य चिकित्सा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। इसमें शल्य चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाले चाकू, सुइयां, चिमटे जैसे 125 से भी अधिक आवश्यक उपकरणों के नाम हैं। लगभग 300 प्रकार की शल्य क्रिया के उल्लेख भी हैं।

डॉ. बृजेंद्रनाथ सील लिखते हैं कि सुश्रुत औषधि से रुधिर-स्राव को रोक सकते थे और पथरी भी निकालते थे। आंत्रवृद्धि, भगंदर, नाड़ी-व्रण एवं अर्श को वे ठोक कर ठीक कर देते थे। वे मूढ़-गर्भ एवं स्त्रियों के रोगों के सूक्ष्म से सूक्ष्म आपरेशन करने में सक्षम थे। विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए शवच्छेद भी होता था। उनके अनुसार, 9वीं व 10वीं सदी में चरक व सुश्रुत संहिता का जावा, मलेशिया व कम्बोडिया आदि देशों में प्रचार हो चुका था।

• आचार्य आर्यभट्टः
महान खगोलशास्त्री, ज्योतिषविद् व गणितज्ञ आर्यभट ने सबसे पहले कहा था कि पृथ्वी गोल है और अपने अक्ष या धुरी पर घूमते हुए सूर्य की परिक्रमा करती है, जिसके कारण रात-दिन होता है। 16वीं सदी में पोलैंड के खगोलवेत्ता कोपरनिकस ने यही बात कही। विडंबना देखिए, भारत समेत पूरी दुनिया में कोपरनिकस का ही सिद्धांत मान्य है। मात्र 23 वर्ष की उम्र में कोपरनिकस ने 'आर्यभटियम' लिखा, जिसमें नक्षत्र-विज्ञान और गणित के 120 सूत्र दिए। इन्हें 'आर्यभट की टीकाएं' कहा जाता है। इसमें आधुनिक विज्ञान के कई सूत्र हैं। जैसे- पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना, पाई का सटीक मान, सूर्य व चंद्र ग्रहण की व्याख्या, समय गणना, त्रिकोणमिति, ज्यामिति, बीज गणित आदि के कई सूत्र व प्रमेय 'आर्यभटीय' में मिलते हैं।

इसके गोलपाद खंड के नौवें श्लोक में पृथ्वी के घूर्णन को स्पष्ट करते हुए आर्यभट लिखते हैं-

अनुलोमगतिर्नोस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत् समपश्चिमगानि लंकायाम् ॥
अर्थात् जिस प्रकार से नाव में बैठा मनुष्य जब प्रवाह के साथ आगे बढ़ता है तो उसे लगता है कि पेड़- पौधे, पत्थर और पर्वत आदि उल्टी दिशा में जा रहे हैं, उसी प्रकार अपनी धुरी पर घूम रही पृथ्वी से जब हम नक्षत्रों की ओर देखते हैं तो वे उलटी दिशा में जाते हुए दिखाई देते हैं। इस श्लोक के जरिए उन्होंने पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की प्रक्रिया को समझाने की कोशिश की है।

• भास्कराचार्य:
न्यूटन से 500 वर्ष पूर्व भास्कराचार्य ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का प्रतिपादन कर लिया था। उन्होंने 'सिद्धांत शिरोमणि' में लिखा है, "पृथ्वी अपने आकाश का पदार्थ स्वशक्ति से अपनी ओर खींच लेती है। इस कारण आकाश का पदार्थ पृथ्वी पर गिरता है। इससे सिद्ध होता है कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है।" सर्वप्रथम भास्कराचार्य ने ही बताया कि जब चंद्रमा सूर्य को ढक लेता है तो सूर्य ग्रहण तथा पृथ्वी की छाया चंद्रमा को ढकती है तो चंद्र ग्रहण होता है। लोगों को गुरुत्वाकर्षण, चंद्र और सूर्य ग्रहण की सटीक जानकारी मिलने का यह पहला लिखित प्रमाण था।

• ब्रह्मगुप्त:
एक बार महान दार्शनिक बर्टेड रसेल से पूछा गया कि विज्ञान के क्षेत्र में भारत की सबसे महत्वपूर्ण देन क्या है, तो उनका उत्तर था- 'जीरो' यानी शून्य। शून्य से दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति निकली, जिसका आविष्कार गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने किया था। यह पद्धति भारत की विश्व को सबसे बड़ी बौद्धिक देन है। आज विश्व में इसी अंक पद्धति का उपयोग होता है। यह अंक पद्धति अरबों के जरिये यूरोप पहुंचकर 'अरबी अंक पद्धति' और अंततः 'अंतरराष्ट्रीय अंक पद्धति' बन गई। भारतीय संविधान में इस अंक पद्धति को 'भारतीय अंतरराष्ट्रीय अंक पद्धति' कहा गया है। प्रसिद्ध विद्वान काजोरी ने 'हिस्ट्री आफ मैथमैटिक्स' में लिखा है कि 600 ई. तक भारतीय गणितज्ञों ने ऐसे-ऐसे उच्च सिद्धांतों का आविष्कार कर लिया था, जिनका ज्ञान यूरोपीय विद्वानों को सदियों बाद हुआ। वैदिक गणितज्ञ मेधतिथि 1012 तक की बड़ी संख्याओं से परिचित थे। वे अपनी गणनाओं में दस और इसके गुणकों का उपयोग पूरी सहजता से करते थे। 'यजुर्वेद संहिता' के अध्याय 17 के दूसरे मंत्र में 10,00,00,00,00,000 (दस खरब) तक की संख्या का उल्लेख मिलता है। अंग्रेजी विश्वकोश 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' (जिल्द 17, पृ. 626) में डॉ. बूलर ने लिखा है कि शून्य की योजना कर वर्तमान में प्रचलित नौ अंकों की सृष्टि भारत में ही हुई थी। वहां से इसे अरबों ने और फिर यूरोपीय देशों ने सीखा।

इससे पहले कैल्डियन, हिब्रू, ग्रीक, अरब आदि जातियां वर्णमाला के अक्षरों से अंकों का काम लेती थीं। अलबरूनी ने लिखा है-अरब के लोग अंक-क्रम में एक हजार तक ही जानते हैं, जबकि भारतीय अपने संख्या सूचक क्रम को 18वें स्थान तक ले जाते हैं, जिसको परार्द्ध कहते हैं। इसी तरह अलबरुनीज इंडिया (पृ. 174-77) में लिखा है कि अंकगणित की तरह बीजगणित भी भारतवर्ष से ही पहले अरब और फिर यूरोप में गया। प्रो. मोनियर विलियम्स कहते हैं कि बीजगणित और ज्यामिति तथा खगोल शास्त्र भारतीयों ने ही आविष्कृत किया। मूसा और याकूब ने भारतीय बीजगणित का प्रचार अरब में किया था। भले ही आज दुनिया भर में यूनानी ज्यमितिशास्त्री पाइथागोरस और यूक्लिड के सिद्धांत पढ़ाए जाते हैं, लेकिन यह जानना दिलचस्प होगा कि भारत के प्राचीन गणितज्ञ बोधायन ने पाइथागोरस के सिद्धांत से पहले यानी 800 ईसा पूर्व शुल्ब तथा श्रौत सूत्र की रचना कर रेखागणित व ज्यामिति के महत्वपूर्ण नियमों की खोज की थी। उस समय भारत में रेखागणित, ज्यामिति या त्रिकोणमिति को शुल्ब शास्त्र कहा जाता था। प्राचीन साक्ष्य बताते हैं कि शुल्ब शास्त्र के आधार पर विविध आकार-प्रकार की यज्ञवेदियां बनाई जाती थीं।

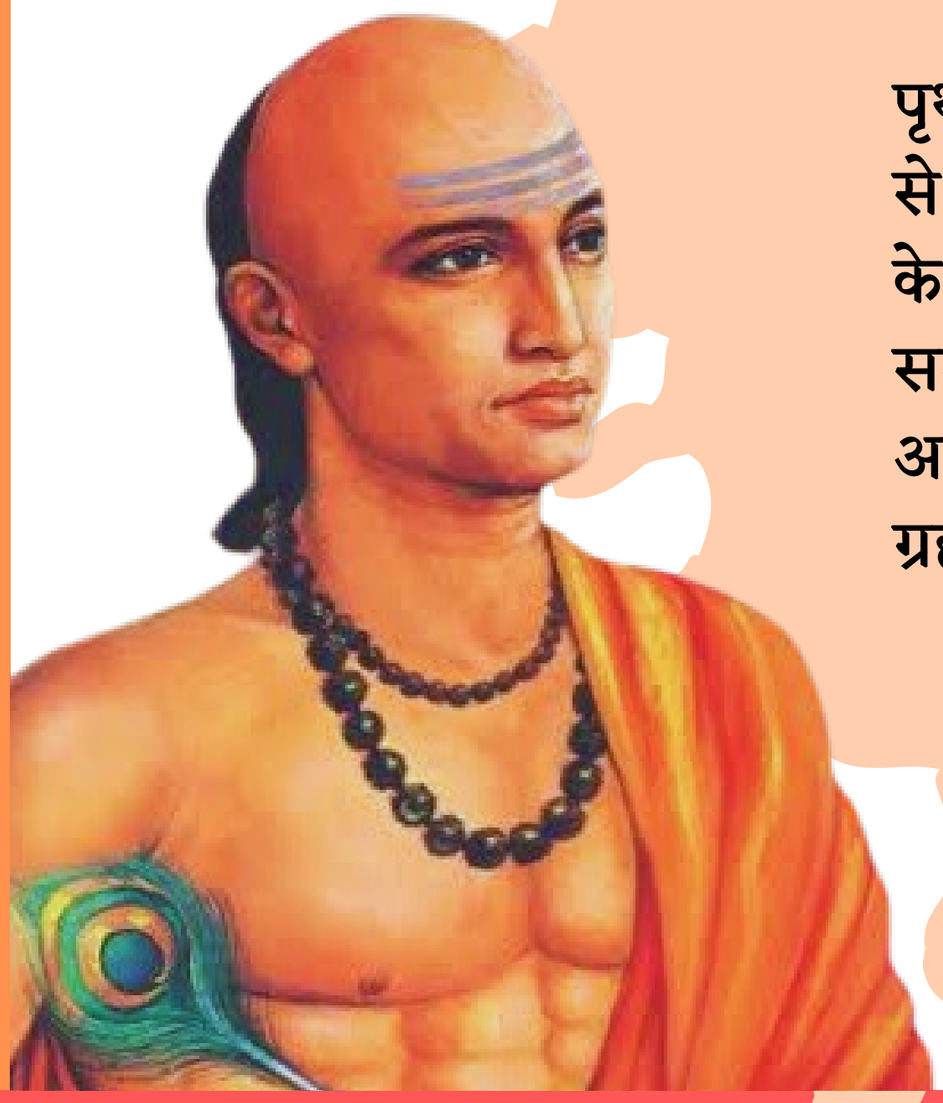

**आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत् खस्थं**
**गुरुस्वाभिमुखं स्वशक्तत्या।**
**आकृष्यते तत्पततीव भाति**
**समेसमन्तात् क्व पतत्वियं खे।।**

पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है। पृथ्वी अपनी आकर्षण शक्ति से भारी पदार्थों को अपनी ओर खींचती है और आकर्षण के कारण वह जमीन पर गिरते हैं। पर जब आकाश में समान ताकत चारों ओर से लगे, तो कोई कैसे गिरे? अर्थात आकाश में ग्रह निरावलम्ब रहते हैं क्योंकि विविध ग्रहों की गुरुत्व शक्तियाँ संतुलन बनाए रखती हैं।

**- भास्कराचार्य**

# धन्यवाद!!

सर्वप्रथम ज्ञानदाता श्री गणेश व माँ शारदे को प्रणाम,श्री माँ वैष्णो देवी के चरणों मे हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा ज्ञानधारा रूपी पुष्प को हम अर्पित कर रहे हैं। पत्रिका का यह अंक शिवावतार जगद्गुरु आदि शंकराचार्य को समर्पित है। आचार्य शंकर भारत एवं सनातन संस्कृति के चेतना हैं। उन्होनें अपने वेदादि शास्त्रों के महान ज्ञान के बल पर राष्ट्र की आत्मा को पुनः प्रकाशित किया एवं एकात्म तत्व का संचार किया। अखाड़ो एवं दसनामी परम्परा की स्थापना कर धर्म की रक्षा को प्रबलता प्रदान की। द्वापर में नारायणावतार भगवान कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने वेदों का विभाग कर महाभारत तथा पुराणादि की एवं ब्रह्मसूत्रों की संरचनाकर एवं शुक लोमहर्षणादि कथाव्यासों को प्रशिक्षितकर धर्म तथा अध्यात्म को उज्जीवित रखा। कलियुग में भगवत्पाद श्रीमद् शंकराचार्य ने भाष्य, प्रकरण तथा स्तोत्रग्रन्थों की संरचना कर, विधर्मियों-पन्थायियों एवं मीमांसकादि से शास्त्रार्थ, परकायप्रवेशकर, नारदकुण्ड से अर्चाविग्रह श्री बदरीनाथ एवं भूगर्भ से अर्चाविग्रह श्रीजगन्नाथ दारुकब्रह्म को प्रकटकर तथा प्रस्थापित कर, महाराज सुधन्वा को राजसिंहासन समर्पित कर एवं चतुराम्नाय-चतुष्पीठों की स्थापना कर अहर्निश अथक परिश्रम के द्वारा धर्म और अध्यात्म को उज्जीवित तथा प्रतिष्ठित किया। भगवान आदि शंकर के चरणों में प्रणाम।

इस पत्रिका में साथ ही श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय की भविष्यद्रष्टा सोच,महापुरुषों के तेजस्वी वाक्य, जीवनोपयोगी कथाएं, लेख/कविता व कला भी समाहित की गयी है। ज्ञानधारा पत्रिका इस अंक के रूप में माँ वैष्णवी के आशीर्वाद व गुरुजनों के मार्गदर्शन से ज्ञान की ज्योति को लेकर युग निर्माण की राह प्रशस्त कर रही है व करती रहेगी।

पत्रिका का पाठन कर आनंद का अनुभव करें।

शुभकामनाओं सहित!

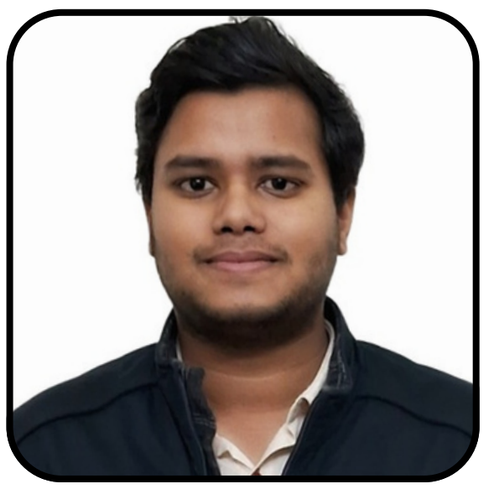

- मिलिन्द शुक्ल

(छात्र सचिव, हिन्दी प्रकोष्ठ)

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय एवं पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज के बीच शैक्षणिक अनुबंध हुआ।

विश्वविद्यालय में सारंग: वार्षिक खेल महोत्सव का भव्य समापन हुआ।

विश्वविद्यालय में हरित-प्रमाणित निर्माण सामग्री पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ।

विश्वविद्यालय में प्रधानमंत्री जन औषधी केन्द्र का शुभारम्भ हुआ।

विश्वविद्यालय में नीति आयोग के संयुक्त सचिव श्री युगल जोशी ने पर्यावरण के लिए मिशन लाइफस्टाइल में विशेषज्ञ व्याख्यान दिया।

विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग पर कार्यशाला का आयोजन हुआ।

विज्ञानं ब्रह्म

# हिन्दी प्रकोष्ठ, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय की ज्ञानधारा पत्रिका एवं भाषायी संवादपत्र पढ़कर आनंद का अनुभव करें।

• स्कैन करें एवं सारिणी में द्वितीय व तृतीय स्थान पर अंकित

:: स्कैन करें ::

smvdu.ac.in पर जाएं।

hindi.cell@smvdu.ac.in

• उपरोक्त ईमेल पर अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

::संरक्षक::
प्रो. प्रगति कुमार (मा० कुलपति)

::नोडल अधिकारी::
डॉ. अनुराग कुमार

::छात्र सचिव::
मिलिन्द शुक्ल

विज्ञानं ब्रह्म

# श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

[ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) अधिनियम 1956 की धारा 2 (एफ) और 12 (बी) के तहत ]

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय (एसएमवीडीयू) की स्थापना जम्मू और कश्मीर श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय अधिनियम 1999 के तहत की गई है। यह पूरी तरह से आवासीय विश्वविद्यालय है। इसका उद्घाटन 19 अगस्त 2004 को भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के करकमलों से हुआ। डॉ० कलाम ने विश्वविद्यालय के छात्रों को पहला व्याख्यान भी दिया। इस विश्वविद्यालय में अभियांत्रिकी, विज्ञान, प्रबंधन, परिचर्या और मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय हैं। इसके 15 विभागों में बी.टेक., बी.आर्क., एम.टेक., बी.एससी., एम.एससी., बी.ए., एमए और पीएच.डी. स्तर पर पढ़ाई होती है।

----आधारभूत मूल्य----

- शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और उत्तरदायित्व
- प्रत्येक व्यक्ति के विचारों का सम्मान और सहिष्णुता
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रासंगिकता वाले विषयों पर ध्यान देना
- बौद्धिक उत्कृष्टता और रचनात्मकता की सराहना
- वैज्ञानिक अन्वेषण की निरंतरता


**परिसर कार्यालय:**

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
उपडाकघर, कटड़ा
जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश-182320
ईमेल: info@smvdu.ac.in
फैक्स: 01991-285694

**जनसंपर्क कार्यालय:**

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
सरस्वती धाम,रेल प्रमुख परिसर,जम्मू
जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश-182320
संपर्क नंबर: 9622885588
फोन/फैक्स: 0191-2470067

विज्ञानं ब्रह्म

# विश्वविद्यालय का दर्शन (Vision) एवं उद्देश्य (Mission) तथा गुणवत्ता नीति (Quality Policy)

## दृष्टि

राष्ट्रीय अखंडता और मानवीय मूल्यों की पवित्रता का संरक्षण करते हुए भारतीय समाज और सम्पूर्ण विश्व की सेवा के लिए प्रतिभाशाली युवाओं के विकास एवं संपोषण हेतु एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक और तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना

## उद्देश्य

उत्कृष्टता के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिमानों के साथ समाजोपयोगी शिक्षा, विद्वत्ता एवं अनुसंधान को बढ़ावा देना

## गुणवत्ता नीति

पूर्ण सहभागिता एवं पारदर्शी व्यवस्था द्वारा उत्तम शैक्षणिक वातावरण का सदुपयोग कर लोगों में निष्ठा, दक्षता और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण बौद्धिक और वैयक्तिक क्षमता का अनवरत विकास

# हिन्दी प्रकोष्ठ
# श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
# कटड़ा,जम्मू एवं कश्मीर,भारत-182320

## ----हिन्दी प्रकोष्ठ----

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रकोष्ठ की स्थापना का निर्णय यूजीसी के निर्देशों के अनुपालन में विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद् द्वारा इसकी 24वीं बैठक में 23.11.2015 को लिया गया। इसके क्रियान्वयन की अधिसूचना 15.02.2016 को निर्गत की गयी। इसके क्रियान्वयन के लिए समन्वयक/नोडल अधिकारी को नियुक्त किया गया साथ ही छात्र सचिव के पद का भी सृजन किया गया। हिन्दी प्रकोष्ठ के निम्नलिखित उद्देश्य और दायित्व निर्धारित किए गए:

1. कार्यालय और विद्यार्थियों से संबन्धित सूचनाओं को हिन्दी माध्यम से करने को बढ़ावा देना,
2. विद्यार्थियों को हिंदी में सीखने और बातचीत करने के लिए तथा राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद/भाषण, निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना,
3. पुस्तकालय में सामान्य अभिरुचि पठन अनुभाग के लिए महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हिंदी पुस्तकें/साहित्य और हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को खरीदना और सदस्यता लेना,
4. समाचार पत्र, छात्र पत्रिका आदि जैसे संस्थागत प्रकाशनों में हिंदी लेखों का प्रकाशन,
5. हिन्दी में संगोष्ठी/वाद-विवाद/लोकप्रिय व्याख्यान आदि आयोजित करना,
6. हिंदी में अनुवाद, ऑनलाइन सामग्री का निर्माण आदि को प्रोत्साहित करें, नाटक, नुक्कड़ नाटक, एकांकी आदि जैसे थिएटर कार्यक्रमों का आयोजन करना,
7. चर्चा करें और गतिविधियों का एक कैलेंडर तैयार करें और पुरस्कारों का प्रस्ताव भी देना,
8. हिंदी के प्रचार के लिए किसी अन्य स्वीकृत गतिविधि का क्रियान्वयन करना।

अपनी रचनाएं भेजें: hindi.cell@smvdu.ac.in

www.hindicell.smvdu.ac.in